International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 264-266

रीवा जिले में युवाओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुकता व अवबोधन का अध्ययन

डॉ. अरुण कुमार ओझा
प्राचार्य, वैष्णवी शिक्षा महाविद्यालय, घुरेहटी, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में युवाओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुकता व अवबोधन का अध्ययन पर आधारित है। शोध पत्र द्वारा यह ज्ञात किया गया कि युवाओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति कितनी जागरुकता है व उनकी इस अभियान के प्रति क्या अवधारणा है। इस शोध द्वारा यह भी ज्ञात किया गया कि अभियान के प्रति जागरुकता फैलाने में किस माध्यम की अहम भूमिका रही। इस शोध पत्र के लिए अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा के 100 विद्यार्थियों का चयन देवनिदर्शन विधि द्वारा किया गया तथा प्रश्नावली के माध्यम से उनकी स्वच्छ भारत अभियान के प्रति प्रतिक्रिया जानी गई। शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस अभियान का युवाओं को स्वच्छता के प्रति जागरुक करने में काफी योगदान रहा है। इस अभियान से प्रेरित होकर युवा सफाई को अपना कर्तव्य समझने लगे हैं।

प्रयुक्त शब्द : रीवा जिला, स्वच्छ भारत अभियान, अवबोधन, जागरुकता

प्रस्तावना
स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ–सुथरा करना है। यह अभियान महात्मा गांधी के जन्मदिवस 02 अक्टूबर 2014 को आरंभ किया गया। महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था।
स्वच्छ भारत का उद्देश्य व्यक्ति, क्लस्टर और सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले शौच को कम करना या समाप्त करना है। स्वच्छ भारत मिशन लैट्रिन उपयोग की निगरानी के जबावदेह तंत्र को स्थापित करने की भी एक पहल करेगा। सरकार ने 2 अक्टूबर 2019, महात्मा गांधी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत (यूएस $30 बिलियन) के 1.2 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले में शौंच मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य रखा है।
भारत की वर्तमान जनसंख्या लगभग 1.33 बिलियन है। 1.33 बिलियन लोगों का देश भारत, विकास के पथ पर निंरतर प्रगतिरत है। अपनी इस विकास की राह पर यह अनेक समस्याओं से जूझ रहा है, इनमें से एक भयावहक समस्या है संक्रमित रोगों में होने वाली मृत्यु। कई ऐसी बीमारियां है जिनका प्रत्यक्ष संबंध साफ–सफाई की आदतों से है।[1] स्वच्छता से से जुड़े लगभग 90 प्रतिशत सफाई कर्मी विभिन्न प्रकार के संक्रमणों वाले रोगों की चपेट में आकर 60 वर्ष पूरा करने से पहले ही मौत का शिकार बन जाते है। स्वच्छता कार्यक्रम लंबे समय से सरकारी नीति का हिस्सा रहे हैं, लेकिन अब से पहले यह प्रशासनिक या मीडिया कवरेज, दोनों ही स्तरों पर बड़ा अभियान नहीं बन सके[2] 2 अक्टूबर 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्मतिथि के अवसर पर 'स्वच्छ भारत' अभियान की शुरुआत हुई और इस अभियान को नागरिक कर्तव्य से जोड़कर राष्ट्रभक्ति की भावना से संजोया गया। स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य साल 2019 तक हर गांव, शहर, कस्बे को साफ करने, पक्के टायलेट, पीने का साफ पानी, व कचरा निपटाने की ठोस व्यवस्था करना है।[3]
स्वच्छ भारत, निर्मल भारत अभियान जोकि 2012 से चालू है का एक विस्तारण रूप है। इस अभियान के पूर्वज अभियान है, संपूर्ण स्वच्छता अभियान व ग्रामीण स्वच्छता अभियान। परन्तु इस बार जिन घनिष्ठ प्रयासों के साथ 'स्वच्छता अभियान' को शुरू किया गया वह सराहनीय है। वास्तव में स्वच्छ भारत आज के समय की जरूरत है। विश्व में भारत को संस्कृति व अध्यात्म का श्रेष्ठ माना जाता है साथ ही सबसे गंदा देश भी जाना जाता है। सरकार व प्रशासन जो करना चाहते है वह करने दिया जाए व वह कर भी दे तब भी शहर, गलियां व मोहल्ले तब तक स्वच्छ नहीं रह सकते जब तक प्रत्येक नागरिक स्वच्छता की महत्वता समझकर इसे अपना कर्तव्य न मान ले। जब तक हर एक व्यक्ति स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग नहीं देगा तब तक यह चमत्कार होना असंभव है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य युवाओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुकता व अवबोधन का अध्ययन करना है।

शोध समीक्षा
गीता प्रदेशी ने अपने शोध Women in Total sanitation campaign : A case study from Yavtamal district, Maharashtra में टोटल सेनिटेशन कैम्पेन में महिलाओं की जिम्मेदारी और भागीदारी पर शोध अध्ययन किया। शोधार्थी ने यह पाया कि महिलाओं ने इस अभियान के लिए अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है तथा इस अभियान को अपने गांव में सफल बनाने के लिए सफल प्रयास किये है। इस शोध में यह पाया गया कि महिलाओं का स्वच्छता के प्रति रवैया उनके परिवार को प्रभावित करता है तथा बच्चों और बड़ों को स्वच्छता के प्रति जागरुक करता है।
Shame or subsidy revisited : Social mobilization for sanitation in Orissa, India by Subhrendu K. Pattanayak *et al.* (2009) [5] यह शोध पत्र ग्रामीण उड़ीसा के गरीब परिवारों के लिए सामाजिक बदलाव की रणनीति में शर्म और सब्सिडी दोनों के एकत्रित प्रयोग के प्रभाव को दर्शाता है। इस शोध के अन्तर्गत शोधकर्ता ने एक सफाई अभियान का अध्ययन किया है। यह अभियान उत्तरदाताओं के लिए कितना उपयोगी रहा यह जानने के लिए उत्तरदाताओं से अभियान से पहले तथा अभियान के बाद दोनों बार प्रश्न पूंछे गये तथा अभियान के प्रभाव को जांचा गया। शोध में यह पाया गया कि शौचालय की व्यवस्था उपचारित गांवों में अनुपचारित गांवों की अपेक्षा ज्यादा पाई गई जो कि 6.00 प्रतिशत से बढ़कर 32.00

प्रतिशत हो गई थी। सब्सिडी भारी बजट की कमी को दूर कर सकती है किन्तु शर्म सामाजिक तत्व व साथियों द्वारा उत्पन्न मानसिक प्रभाव स्वच्छता में विशेष प्रभाव डालते है।

अध्ययन का उद्देष्य

1. रीवा जिले के युवाओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुकता का पता लगाना।
2. रीवा जिले के युवाओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अवधारणा का पता लगाना।
3. अभियान के प्रति जागरुकता फैलाने में किस माध्यम की अहम् भूमिका रही का पता लगाना।

शोध परिकल्पना

शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिशा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैः–

1. "रीवा जिले के युवाओं में स्वच्छत भारत अभियान के प्रति जागरुकता बढी है।"

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा के विद्यार्थियों पर किया गया है।

न्यादर्श चयन

शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 100 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

साक्षात्कार विधि : शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

साख्यिकीय विधि : सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेशण हेतु, सांख्यकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध क्षेत्र का परिचय :

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1 : युवाओं में स्वच्छत भारत अभियान के प्रति जागरुकता का अध्ययन

क्र.	विवरण	रेडियो	टी.वी.	इंटरनेट	प्रिंट मीडिया	इनमें से कोई नहीं
1.	विज्ञापन	2.00	73.00	8.00	7.00	10.00
2.	स्लोगन	6.00	30.00	13.00	9.00	42.00
3.	स्पीच	10.00	38.00	3.00	7.00	42.00
4.	स्वच्छता शपथ	5.00	27.00	4.00	6.00	58.00
5.	स्पेशल प्रोग्राम	4.00	29.00	5.00	8.00	54.00
6.	डोक्यूमेंट्री	2.00	24.00	3.00	12.00	59.00
7.	अन्य	3.00	8.00	2.00	6.00	81.00

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में अभियान के प्रचार के लिए सबसे प्रभावी माध्यम 10.00 प्रतिशत स्पीच विज्ञापन के लिए रेडिया, 73.00 प्रतिशत विज्ञापन के लिए टेलीविजन, 13.00 प्रतिशत स्लोगन के लिए इंटरनेट, 12.00 प्रतिशत डोक्यूमेंट्री के लिए प्रिंट मीडिया उत्तरदाताओं ने बताया है। अभियान के प्रचार प्रसार में प्रयुक्त विज्ञापन, स्लोगन, स्पीच, स्वच्छता शपथ, स्पेशल प्रोग्राम, डोक्यूमेंट्री व अन्य हेतु प्रयुक्त माध्यमों मं सबसे सशक्त माध्यम टेलीविजन को पाया गया, वहीं दूसरे स्थान पर न्यू मीडिया, तीसरे स्थान पर प्रिंट मीडिया व इसके बाद रेडियों का स्थाना पाया गया।

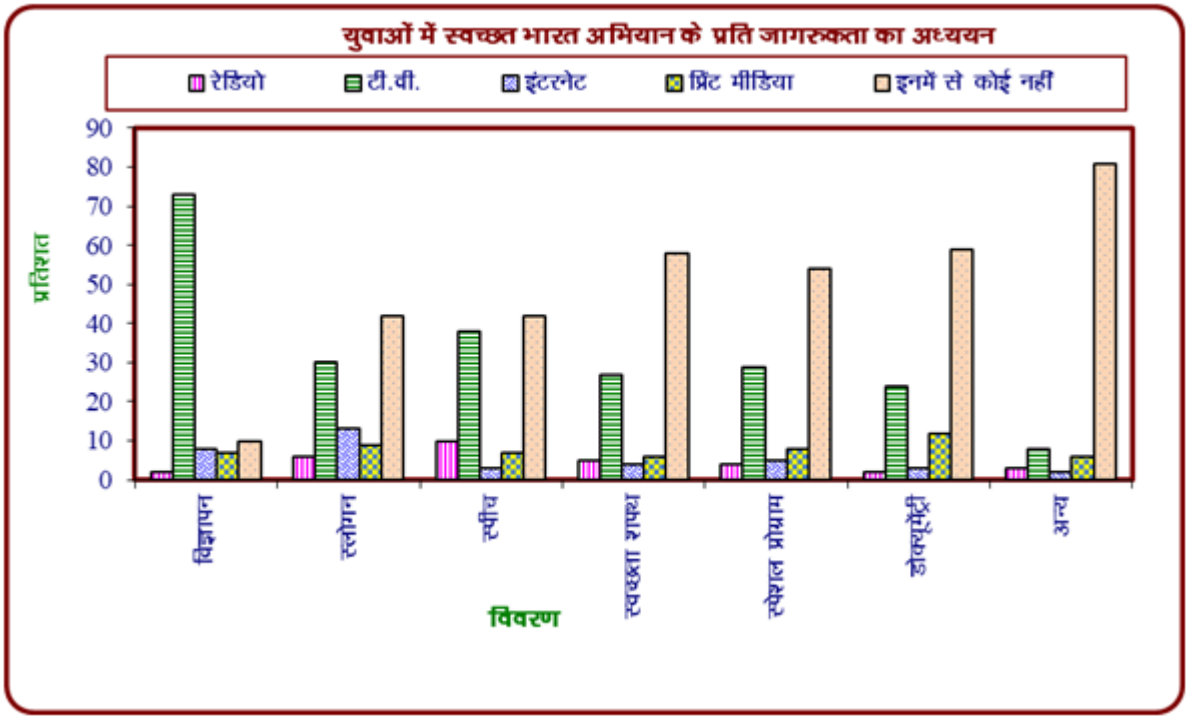

आकृति 1

शोध के दौरान पूछे गये प्रश्न क्या आप स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानते है कि प्रतिक्रिया में सभी उत्तरदाताओं ने कहा कि हाँ वे इस अभियान के बारे में जानते है। उन्हें इस अभियान के बारे में जानकारी है, जबकि एक भी उत्तरदाता ऐसा नही मिला जिसने इस बात को नकारा हो। अतः रीवा जिले के युवाओं में भी स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुकता बढी है।
अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि स्वच्छ भारत अभियान जोकि सफाई के प्रति देश में जागरुकता फैलाने के लिए चलाया गया है वह युवाओं में जागरुकता लाने में सक्रिय रहा है। अभियान के प्रचार–प्रसार में टेलिविजन की भूमिका सबसे अहम पायी गयी। अभियान से जुड़े विज्ञापनों ने टेलिविजन के माध्यम से युवाओं में सफाई के प्रति जागरुकता फैलाने में अहम भूमिका निभाई है।

संदर्भ

1. सिंह, आशुतोष कुमार, स्वच्छ भारत से ही साकार होगा स्वस्थ भारत, योजना. 2015; 59(1)37.41.
2. संपादकीय, कौन का प्रश्न, योजना. 2015; 59(1):7.
3. पाण्डेय, संदीप कुमार, स्वच्छ भारत अभियान में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्ता, योजना. 2015; 59(1):15.
4. Pardeshi G. Women in Total Sanitation Campaign: A case study from Yavtamal District,Maharashtra, India. J. Hum. Ecol. 2000-2009; 25(2):79-85.
5. Pattanayak SK, Yang J, Dickinson KL, Poulos C, Patil SR, Mallick RK *et al.* Shame or subsidy revisited : Social mobilization for sanitation in Orissa,India. BullWorld Health organ. 2009; 87:580-587.